ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 23 | कुल पृष्ठ-8 | 18 से 24 जनवरी, 2018 | दयानन्दाब्द 193 | सृष्टि सम्वत् 1960853118 | सम्वत् 2074 | मा. शु.-01

मकर संक्रान्ति पर्व के अवसर पर

आर्य समाज गंगाना, जिला–सोनीपत, हरियाणा के तत्वावधान में

विशेष यज्ञ एवं कम्बल वितरण समारोह का आयोजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि रहे

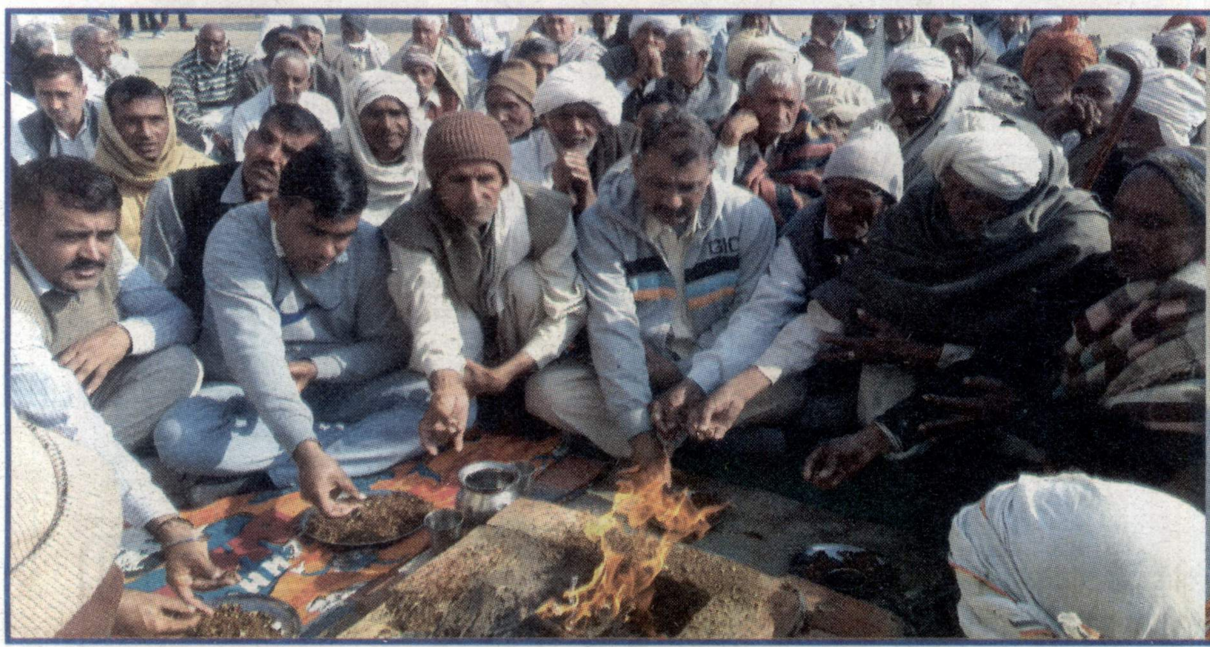

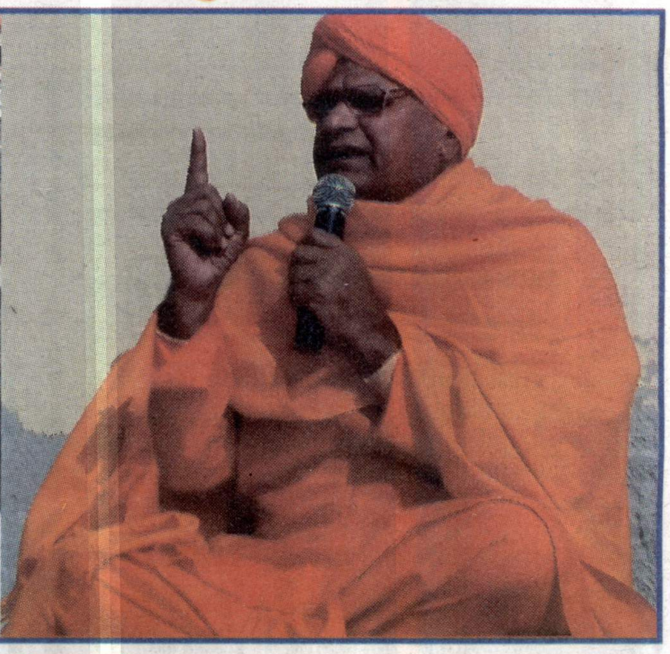

मकर संक्रान्ति पर्व के पावन अवसर पर 14 जनवरी, 2018 को आर्य समाज गंगाना, जिला–सोनीपत, हरियाणा द्वारा विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में सैकड़ों ग्राम वासियों (स्त्री–पुरुषों) एवं गणमान्य महानुभावों ने आहुति देकर विशेष संकल्प किये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने इस अवसर पर शराब आदि मादक पदार्थों को छोड़ने के संकल्प करवाये। यज्ञ का सम्पादन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान आचार्य दीक्षेन्द्र जी ने किया। वेद पाठ में ब्र. धर्मदेव जी ने सहयोग किया। कार्यक्रम का संयोजन सार्वद्रेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री प्रिं. आजाद सिंह जी ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने अपना सारगर्भित प्रवचन देते हुए यज्ञ की महिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया जिन कार्यों से प्राणी मात्र का उपकार होता है वे सभी कार्य यज्ञ की श्रेणी में आते हैं जिस प्रकार देवयज्ञ से वायुमण्डल शुद्ध होता है तथा प्रत्येक प्राणी जो उस वायुमण्डल से श्वांस लेकर जीवित रहता है इससे सभी प्राणी समान रूप से लाभान्वित होते हैं। अतः देवयज्ञ संसार में सर्वश्रेष्ठ कार्य माना जाता है। इसी प्रकार देश अथवा समाज के लिए निष्काम भाव से त्याग एवं बलिदान करना, असहायों, निराश्रितों, अनाथों, निर्बलों, दीन–दुखियों की सहायतार्थ सहयोग करना उन्हें भोजन, वस्त्र, औषधि एवं अन्य जीवनोपयोगी वस्तुएँ उपलब्ध कराकर उनकी सहायता करना भी यज्ञीय कार्य कहलाता है। यज्ञ करने वाला व्यक्ति समर्पण एवं त्याग को आधार बनाकर कार्य करता है। अतः वह निष्कामता एवं निरभिमानता आदि उत्कृष्ट गुणों से सम्पन्न हो जाता है। इन गुणों से सम्पन्न हो जाने से ही मानव जीवन की सार्थकता सिद्ध होती है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि जबसे यज्ञीय भावना एवं यज्ञादि कर्मों का समाज में अभाव हुआ है तबसे विविध बुराईयाँ समाज को पतन की ओर ले जाने लगी हैं। आज प्रत्येक मनुष्य अपने हितों की ही चिन्ता करता है और इसके लिए छल–कपट, बेईमानी, हेराफेरी एवं भ्रष्टाचार के

तरीके अपनाकर धन इकट्ठा करना चाहता है जो उसे धर्म के रास्ते से हटाकर अधर्म की ओर ले जाता है। वेद में विविध मंत्रों के माध्यम से परमात्मा ने मनुष्यों को त्यागभाव से जीने की प्रेरणा दी है, किन्तु अपनी ही उन्नति से संतुष्ट रहने वाला व्यक्ति औरों के बारे में नहीं सोचता। यजुर्वेद के 40वें अध्याय का प्रसिद्ध मंत्र –

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्येक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

स्पष्ट रूप से प्रेरणा देता है कि इस चराचर जगत में वह ईश्वर विद्यमान है और वह हमें सभी पदार्थ उपलब्ध कराता है। अतः उन साधनों का उपभोग त्याग भाव से करना चाहिए। यह त्याग भाव ही यज्ञ के माध्यम से इदन्नमम् के द्वारा हम बार–बार उच्चारण करके सीखते हैं। मनुष्य की अपनी आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है कि यज्ञीय भावना को अपने हृदय में धारण करके परोपकार करने का संकल्प करें। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के मुख्य यजमान श्री बलराम आर्य तथा उनके भाई पूर्व सरपंच श्री श्रीकृष्ण आर्य को विशेष साधुवाद दिया और कहा कि इन्होंने अपनी पवित्र कमाई में से यह विशाल यज्ञ, ऋषि लंगर एवं सैकड़ों बुजुर्ग स्त्री–पुरुषों को कम्बल देकर जो व्यय किया है, यह सही अर्थों में यज्ञ है और यह भावना ही इन्हें समाज में विशेष प्रतिष्ठा प्रदान कर रही है।

स्वामी जी के प्रवचन के पश्चात् ग्रामवासियों एवं श्रीकृष्ण एवं बलराम आर्य ने स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य दीक्षेन्द्र जी, ब्र. धर्मदेव आर्य, पूर्व पार्षद् श्री कुलदीप सिंह हुड्डा का शॉल भेंटकर स्वागत किया। तत्पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी, श्री कुलदीप हुड्डा एवं गांव के सरपंच श्री देवेन्द्र सिंह के कर–कमलों से सैकड़ों बुजुर्ग स्त्री–पुरुषों को कम्बल भेंट करवाये गये।

कम्बल वितरण समारोह बड़ा ही आकर्षक एवं प्रशंसनीय आयोजन रहा। मकर संक्रान्ति के अवसर पर प्रायः परिवारों में बड़े बुजुर्गों को उन परिवारों की नव–विवाहित बहुएँ कम्बल आदि देकर सम्मानित करती हैं। किन्तु इस समारोह में श्री बलराम एवं श्री श्रीकृष्ण आर्य ने अपनी ओर से सैकड़ों व्यक्तियों को कम्बल भेंटकर एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया और मकर संक्रान्ति पर्व को सही अर्थों में मनाया। समारोह के उपरान्त ऋषि लंगर की विशेष व्यवस्था थी जिसमें सभी लोगों ने सुस्वादु भोजन ग्रहण किया। इस कार्यक्रम में श्री विक्रम सिंह आर्य, मा. रणजीत सिंह, श्री सत्यपाल, मा. राजेन्द्र, मा. कर्मवीर देशवाल आदि ने व्यवस्था आदि बनाने में सहयोग प्रदान किया।

जहां नहीं होता कभी विश्राम — ओ३म् — आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 39 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

वायु प्रदुषण, पर्यावरण शुद्धि व राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु

डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सानिध्य में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 26, 27, 28 जनवरी 2018 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, अशोक विहार फेज-1, दिल्ली-110052

(मेजर ध्यानचंद स्पोर्टस् स्टेडियम के सामने, निकट कन्हैया नगर मैट्रो स्टेशन)

राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन

दोपहर: 2.00 बजे से 5.00 बजे तक

अध्यक्षता : श्रीमती अन्जु जावा (संरक्षक, स्त्री आर्य समाज प्रशान्त विहार)
मुख्य अतिथि : स्वामी सुमेधानन्द जी (संसद सदस्य)
प्रि. अन्जू महरोत्रा, श्रीमती चन्द्रप्रभा अरोड़ा, नीता खन्ना
विशिष्ट अतिथि: श्रीमती रचना आहुजा, माता शीला ग्रोवर (समाजसेवी)
दीप प्रज्जवलन: श्रीमती गायत्री मीना (प्रधाना, स्त्री आर्य समाज सै.-33, नोएडा)
संयोजक : श्रीमती उर्मिला आर्या (प्रदेश अध्यक्षा, केन्द्रीय आर्य युवती परिषद्)

मुख्य वक्ता: डॉ. निष्ठा विद्यालंकार (लखनऊ), आयुषी राणा, कल्पना आर्या, प्रि. नीता जेठी, डॉ. सुषमा आर्या, सुनीता बुग्गा, स्वर्णा आर्या, कविता आर्या

भव्य व्यायाम शक्ति प्रदर्शन

सायं 5.00 बजे से 6.00 बजे तक

अध्यक्षता : श्रीसुभाषबब्बर (अध्यक्ष, केन्द्रीयआर्ययुवकपरिषद्, जम्मूकाश्मीर)
मुख्यअतिथि : श्रीमनोजकुमारजैन (एम.डी., अरिहन्तब्रदर्सलिमिटेड)
संयोजक : सर्वश्री चन्द्रदेवशास्त्री, शंकरदेवआर्य, मोहितआर्य गौरवगुप्ता, राकेश आर्य, गौरवआर्य, शिवकान्त
विशिष्ट अतिथि: श्री प्रवीण तायल (बृज एण्ड कम्पनी), श्री एस.पी. सिंह
श्री सतीश नारंग (नारंग प्रोपर्टीज), श्री अमित मान
श्री सत्यानन्द आर्य (दिल्ली), श्री रामेश्वर गोयल
स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुना नगर), श्री प्रवीन भाटिया
श्री विजेन्द्र सिंह आर्य, वीरेश भाटी, मनवीरसिंह राणा
भारतभूषण साहनी, कै. अशोक गुलाटी, ओमप्रकाश पाण्डेय
श्री रविदेव गुप्ता, ओमप्रकाश यजुर्वेदी, चतरसिंह नागर,

शुक्रवार 26 जनवरी 2018 का कार्यक्रम

101 कुण्डीय यज्ञ

प्रात: 8.30 बजे से 10.30 बजे तक

ब्रह्मा : आचार्यअखिलेश्वरजीमहाराज (आनन्दधाम, हरिद्वार)
वेदपाठ : गुरूकुलगौतमनगरकेब्रह्मचारियोंद्वारा
मुख्ययजमान : श्री सुरेन्द्रमानकटाला, श्रीअरुणबंसल (बंसलवायर)
श्रीतिलकचान्दना(CA), श्रीअभिषेक गुप्ता

ध्वजारोहण - प्रात:11.00 बजे
माननीय श्री सुरेन्द्र कोहली द्वारा
(अध्यक्ष, आदर्श पंजाबीकल्चरल सोसायटी)

राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन

प्रात: 11.15 बजे से 2.00 बजे तक

अध्यक्षता : माननीय श्री आनन्द कुमार (पूर्व पुलिस महानिदेशक)
मुख्य अतिथि : माननीय श्री भुवनेश खोसला (महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका)
विशिष्ट अतिथि : श्री जयभगवान गोयल (प्रमुख राष्ट्रवादी शिवसेना)
श्रीमती रमेश कुमारी भारद्वाज, (शिक्षा भारती स्कूल)
श्री ओम सपरा (स्पे. मेट्रो पोलटेन मजिस्ट्रेट)
मुख्य वक्ता : आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, श्री रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़)
आचार्य सत्यवीर शर्मा, श्री वीरेन्द्र योगाचार्य (फरीदाबाद)
आ. धनेश्वर बेहरा (उड़ीसा), श्री सुभाष शास्त्री (बंगलादेश)
आ. भानुप्रताप वेदालंकार(इन्दौर), ब्र0 दीक्षेन्द्र (रोहतक)
श्री विजय गुप्त (आशुकवि), श्री पिंकी चौधरी (गाजियाबाद)

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय कवि सम्मेलन

शुक्रवार, 26 जनवरी 2018
रात्रि 7:00 बजे से रात्रि 9:45 बजे तक

आमंत्रित कवि

श्री धर्मेश अविचल (अलीगढ़), श्री स्वदेश आर्य (कासगंज)
श्री कृष्णगोपाल विद्यार्थी, श्री रोहित आर्य, श्री संदीप शजर

मुख्यअतिथि : श्रीसत्येन्द्रजैन (स्वास्थ्यमंत्री, दिल्लीसरकार)
विशिष्टअतिथि : श्रीराजेशगुप्ता (विधायक), श्रीहरिशंकरगुप्ता (पूर्वविधायक)
श्रीमहेशबत्रा (उपायुक्त, दिल्लीपुलिस), श्रीगुलशनविरमानी
रविचड्डा, मोहनचांदना, ओमप्रकाशजैन, रणसिंहराणा,
वी.के. अग्रवाल, राजीवमुखी, सुषमाअरोड़ा, सुभाषचान्दना
अध्यक्षता : श्रीप्रदीपतायल (पाईटैक्सज्वैलर्स, नेताजीसुभाषपैलेस)
संयोजक : श्रीसत्यप्रकाशभारद्वाज (प्रधान, आ.स.से.-28, फरीदाबाद)

राष्ट्रीय एकता तिरंगा शोभायात्रा

शनिवार 27 जनवरी 2018, प्रात: 10.30 बजे

शुभारम्भ : रामलीला मैदान, अशोक विहार-4, दिल्ली
यज्ञ : प्रात: 8:30 बजे : ब्रह्मा : आचार्य अखिलेश्वरजीमहाराज
मुख्य यजमान: श्री सुरेश आर्य, श्री एस.के.आहुजा (पूर्व ए.सी.पी.)
श्री धर्मदेव खुराना (समाजसेवी), श्री नरेन्द्र कालरा
ध्वजारोहण : ठाकुर विक्रम सिंह (राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी)
मुख्य अतिथि : श्री सिद्धार्थन जी (प्रदेश महामंत्री, भाजपा, दिल्ली)
विशिष्टअतिथि: डॉ. महेन्द्रनागपाल (पूर्व विधायक), श्रीमांगेरामगर्ग (पूर्व विधायक)
श्री योगेश वर्मा (उपाध्यक्ष, केशवपुरम जोन), श्री संजीव शर्मा

शुक्रवार 27 जनवरी 2017 का कार्यक्रम

वेद-संस्कृत रक्षा सम्मेलन

दोपहर 2.30 बजेसेसायं 5.30 बजेतक

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
मुख्य अतिथि : श्रीमती प्रीति अग्रवाल (महापौर उत्तरी दिल्ली नगर निगम)
विशिष्ट अतिथि: श्री माया प्रकाश त्यागी (कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)
दीप प्रज्जवलन: श्री जीतराम भट्ट (सचिव संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार)
संयोजक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री (बौद्धिकाध्यक्ष के.आ.यु.प.)
मुख्यवक्ता : स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

रात्रि 7.00 से 9.45 बजे तक

अध्यक्षता : श्री ओमप्रकाश सिंघल (अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दु परिषद्)
मुख्य अतिथि : श्री गोपाल राय (श्रम व रोजगार मंत्री, दिल्ली सरकार)
विशिष्ट अतिथि: श्री बृजमोहन गर्ग (प्रधान), श्री समीर सहगल (सचिव)
(फेडरेशन ऑफ वजीरपुर विधासभा RWA)
वक्ता : स्वामी आर्यवेश जी , स्वामी श्रद्धानन्द जी
डॉ. महेश शर्मा (पूर्वमहापौर, दिल्ली), आचार्य योगेन्द्र शास्त्री

शिक्षा-संस्कृति रक्षा सम्मेलन

दोपहर 2.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक

अध्यक्षता : डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया (पूर्व प्रो. अध्यक्ष भावनगर विश्वविद्यालय गुजरात)
मुख्य अतिथि : डॉ. सत्यपाल सिंह (केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री भारत सरकार)
विशिष्ट अतिथि: डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व अध्यक्ष, दिल्ली विधान सभा)
श्री सुभाष आर्य (पूर्व महापौर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम)
मुख्य वक्ता : आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, श्री यशपाल यश (जयपुर)
भजन : पं. घनश्याम प्रेमी के तीनों दिन भजन होंगे

कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन: सायं 5.30 से 6.00 तक

नि:शुल्क योग साधना शिविर

डॉ. राजेश बत्रा (वेलनेस केयर) द्वारा आर्य महासम्मेलन के भव्य पण्डाल में प्रतिदिन प्रात: 6:00 से 7:30 बजे तक चलेगा
आप सपरिवार सम्मिलित होकर लाभ उठाएं

रविवार 28 जनवरी 2018 का कार्यक्रम

151 कुण्डीय पर्यावरण शुद्धि यज्ञ

प्रात: 8.30 बजे से 10.30 बजे तक

ब्रह्मा : आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज (आनन्दधाम, हरिद्वार)
वेदपाठ : गुरूकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा
मुख्य यजमान : श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, डॉ. रमाकान्त गुप्ता
श्री राजीव कुमार परम, श्री महेन्द्र मनचन्दा

ध्वजारोहण: प्रात: 11.15 बजे
डॉ. लाजपतराय आर्य चौधरी
(संरक्षक, आर्य केन्द्रीय सभा, करनाल)

राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रात: 11.30 बजे से दोपहर 2.30 बजे तक

अध्यक्षता : आर्य नेता डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान, नई दिल्ली)
मुख्य अतिथि : माननीय डॉ. हर्ष वर्धन जी (केन्द्रीय विज्ञान व प्रोद्योगिक मंत्री, भारत सरकार)
विशिष्ट अतिथि : श्री श्याम जाजू (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा)
श्री आनन्द चौहान, श्री योगराज अरोड़ा, अजय चौहान
डॉ. रिखबचन्द जैन (चेयरमैन टी.टी. ग्रुप), कै. रुद्रसेन सिन्धु
मुख्य वक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार (दिल्ली), स्वामी आर्यवेश जी
आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार
स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल), डॉ. जयेन्द्र आचार्य (नोएडा)

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा "केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली" के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	दुर्गेश आर्य	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय मंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9868664800, 9871581398, 9013137070
E-mail: aryayouth@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के 120वें जन्म दिवस 23 जनवरी, 2018 पर विशेष

अद्वितीय सोच के धनी - नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

- आचार्य उमाशंकर शास्त्री

हमारी मातृभूमि रत्नगर्भा है। इस रत्नगर्भा भारत माँ के गर्भ से अनेकों राजा, महाराजा, योद्धा, शूरवीर, ज्ञानी, ध्यानी, ऋषि महर्षि योगी तपस्वी और न जाने कितने 'रत्न' पैदा हो चुके हैं। इन्हीं देदीप्यमान रत्नों में 'सुभाषचन्द्र बोस' अमूल्य रत्न थे। सुभाष बाबू, क्रांतिकारी थे, ज्ञानी थे, ध्यानी थे, राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले एक शाश्वत हस्ताक्षर थे। जिनके व्यक्तित्व, कृतित्व का प्रभाव सदा अक्षुण्ण रहेगा।

जिस धरती पर सुभाष ने जन्म लिया उसी धरती पर एक महान व्यक्तित्व का स्वामी एक महान आदर्शवान सम्राट ने भी जन्म लिया था जिसका नाम था सम्राट अशोक। भारतवर्ष के इस महान सम्राट को युद्ध से वितृष्णा हो गई और वह धर्म के शरण में चला गया था। उसके कानों में प्रेरणामंत्र गूंजने लगा।

बुद्धं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि।।

वह राजा बुद्ध की शरण में चला गया। धर्म की शरण में चला गया। संघ की शरण में चला गया। हमारे देश में एक और राजा का प्रदुर्भाव हुआ जो अपने मन का राजा था और जनता का वह हृदय सम्राट था नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जो स्वनिर्मित राज्य का अधिष्ठाता बना। इस राजा को धर्म से वितृष्णा हो गई और वह युद्ध की शरण में चला गया और इस राजा के कानों में प्रेरणा मंत्र गूंजने लगा।

युद्धं शरणं गच्छामि, कम्मं शरणं गच्छामि, संघं शरणं गच्छामि।।

यह राजा युद्ध की शरण में चला गया। कर्म की शरण में चला गया और संघ (आजाद हिंद संघ) की शरण में चला गया। सम्राट अशोक ने युद्ध को छोड़ा और धर्म को अपनाया। युद्ध की विभीषिकाओं से उसका मन भर गया। इसने उस युद्ध से अपना सम्बन्ध नहीं रखा जिसका आधार था – रक्तपात, नरसंहार व हाहाकार। सुभाष ने धर्म को छोड़ा। युद्ध को अपनाया। धर्म का तत्कालीन विकृत रूप से उसका मन भर गया। जिसका आधार था प्रदर्शन, मिथ्याचार तथा आडंबरपूर्ण व्यवहार। सुभाष ने धर्म का बाह्य रूप तो छोड़ दिया परन्तु उसकी मूल भावनाओं को नहीं छोड़ सका। धर्म को अपनाकर भी वह युद्ध करता रहा। सुभाष युद्ध करता था 'अज्ञान के अंधकार' से हिंसा की हिंसक प्रवृत्ति से और मन की दुर्बलता से।

सुभाष का धर्म था त्याग, बलिदान, आत्मोत्थान, ईश्वरत्व की उपासना, मातृभूमि की मुक्ति और अथक जनजागरण।

अशोक ने दीक्षा ली थी उपगुप्त से और सुभाष ने दीक्षा ली थी – कर्मवीर चित्तरंजन दास से। अशोक तथा सुभाष की प्रेरणा भूमि एक ही रही। कलिंग के युद्ध ने अशोक का हृदय परिवर्तन किया और उसी का आधुनिक रूप उड़ीसा में सुभाष की पार्थिव देह और उसके संकल्पों का जन्म हुआ।

सुभाष का जन्म 23 जनवरी, 1897 को शनिवार के दिन के 12:15 अपरान्ह पर हुआ। सुभाष का जन्म मध्यान्ह को हुआ और वह जीवन भर मध्यान्ह की सूर्य की भांति चमकता रहा।

उड़ीसा के कटक में जिस समय सुभाष का जन्म हुआ। उस समय भारतवर्ष में हजारों बच्चों का जन्म हुआ होगा पर वे सबके सब तो सुभाष जैसे संकल्पी, धुनी, लक्ष्यनिष्ठ, पराक्रमी और शौर्यवान नहीं हुए। यही स्थिति हमें सोचने को विवश करती है कि यद्यपि संसार में हजारों व्यक्ति एक ही समय में जन्म लेते हैं पर उसमें विरले ही ऐसे होते हैं जो जीवन के लिए कोई ध्येय लेकर आते हैं और इस ध्येय की पूर्ति के लिए उनकी हर सांस आती जाती है। सुभाष का अस्तित्व समुद्र के असंख्य बुलबुलों के 'बाड़व ज्वाला' के समान था। उस समय भारत बड़े आंसुओं के सागर के समान था। जिसमें निराशा, हताशा, हीन भावना की धारा में आकर मिल रही थी। सागर के धरातल पर भी कभी लपटें उठती हैं। सुभाष का जीवन आसुंओं के सागर में उठी हुई लपट के समान था। यह वह लपट थी जिसने अपने को प्रकाश दिया और अपने शत्रुओं को जलाया।

उस प्रचंड 'लपट' के बुझने की कथा जेनरल हबीबुर्रहमान की अभिव्यक्ति के आधार पर चंद शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। सैगोन से 17 अगस्त, 1945 संध्या 5 बजकर 15 मिनट पर उड़ान भरा और दूरेन पहुँचा। रात्रि विश्राम टूरेन में ही हुआ। अगले दिन 18 अगस्त, 1945 को फिर विमान अपरान्ह में तोइहक विमान स्थल पर रूका। विमान में पेट्रोल भराने तथा खाने–पीने के बाद पुनः विमाल 2:35 मिनट पर उड़ा। 200 से 300 फीट ऊपर विमान उठा ही था कि भयंकर आवाज सुनाई पड़ी। नेताजी, जनरल हबीब तथा जनरल शीदी जो विमान के अंदर थे, सभी लोगों ने सोचा दुश्मन के लड़ाकू विमान ने उड़ते देख लिया है और ऊपर से झपट्टा मारा है। परन्तु बाद में समझ में आया कि पोटे इंजन का 'प्रोफेलर' टूट

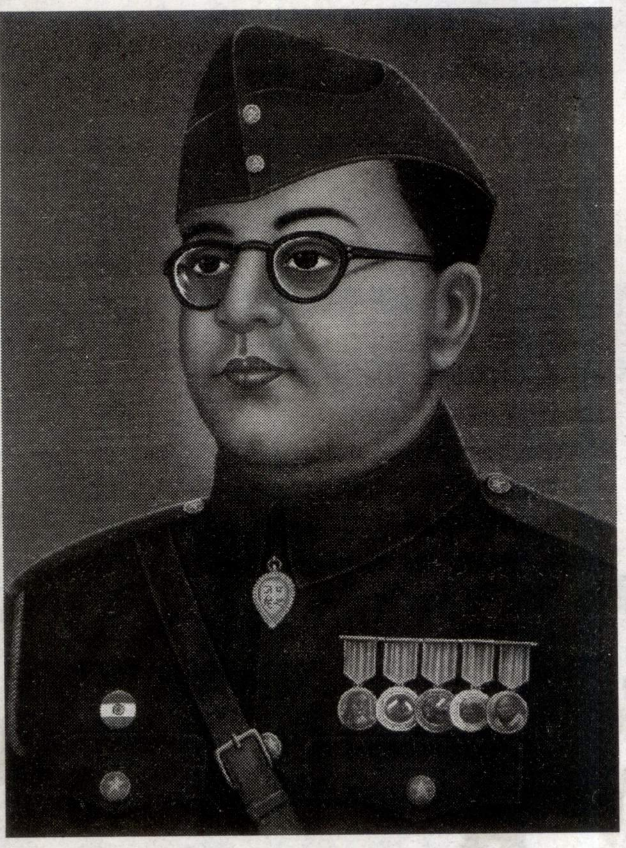

गया है। पोटे इंजन काम करना बन्द कर दिया है। केवल स्टार बोर्ड इंजन काम कर रहा था। हवाई जहाज ने डोलना प्रारम्भ कर दिया था। चालक उसका संतुलन संभालने का प्रयत्न कर रहा था। जनरल हबीब ने नेताजी को देखा, वे बिल्कुल अविचल थे। कुछ ही क्षणों में विमान नाक की तरफ से जमीन में टकराया और थोड़ी देर के लिए आंखों के सामने अंधेरा छा गया। कुछ क्षणोपरान्त जब जनरल हबीब की चेतना लौटी तो उसने अनुभव किया कि सारा सामान उसके ऊपर लदा है और निकट में आग फैली है। नेताजी के सर में चोट लगी थी और वे खड़े हो चुके थे निकलने का प्रयास कर रहे थे। परन्तु पीछे से निकलना सम्भव नहीं था। जनरल हबीब ने नेताजी को आगे से निकलने का निवेदन किया। नेताजी को स्थिति का अंदाजा हो गया था। उन्होंने विमान के अग्रभाग से निकलने का प्रयतन किया जो जमीन से टकराकर चूर हो गया था और जिससे लपटें उठ रही थी। नेताजी उन्हीं लपटों से बाहर निकल गये। नेताजी के खाकी सूती कपड़े पर पेट्रोल फैल गया था और कपड़ों में आग पकड़ ली थी। विमान के बाहर खड़े नेताजी अपने बुशकोट का बेल्ट खोलने का प्रयास कर रहे थे। जनरल हबीब नेताजी की ओर झपटा और पट्टा खोलने में उनकी मदद करने लगा जिससे उसके हाथ बुरी तरह जल गये। नेताजी का चेहरा बुरी तरह जल गया था तथा कट–पिट चुका था। नेताजी कुछ मिनट तक खड़े रहे फिर भूमि पर गिर पड़े। जनरल हबीब को नेताजी की स्थिति देखकर दिल बैठ सा गया और वे भी नेताजी के पास ही पड़ गये और बेहोश हो गये। विमान के दुर्घटना होने के 15 मिनट पश्चात् ही एम्बुलेंस से घायल नेताजी व जनरल हबीब को तोरहूक के सैनिक अस्पताल में पहुंचा दिया गया। नेताजी की बेहोशी नहीं टूटी थी परन्तु जनरल हबीब को होश आ गया था। वे नेताजी के बगल ही में थे। जनरल हबीब किसी तरह लड़खड़ाकर नेताजी के पास पहुंचा। जापानियों ने नेताजी को बचाने का भरसक प्रयास किया परन्तु सब व्यर्थ। अस्पताल में लाये जाने के छह घंटे पश्चात् 18 अगस्त, 1945 के 9 बजे रात्रि में नेताजी शांतिपूर्वक इस संसार से विदा हो गए। क्रांति की लपट बुझ गई। जनरल हबीब ने अपने वक्तव्य में बताया कि मूर्छा की हालत में कभी–कभी हसन का नाम पुकारा। मृत्यु के कुछ समय पूर्व उन्हें होश आया और उन्हें जब पूर्ण विश्वास हो गया कि वे बच नहीं सकेंगे तो हबीब से उन्होंने देशवासियों के नाम छोटा संदेश दे गये। उन्होंने हबीब से कहा – 'हबीब! मेरा अंत बहुत निकट आ गया है। अपने देश की आजादी के लिए मैं जीवनभर लड़ता रहा हूँ। तुम जाकर देशवासियों से कहना कि वे भारत की आजादी के लिए लड़ाई जारी रखें। भारत आजाद होगा और बहुत शीघ्र ही नेता जी के यही अंतिम शब्द थे।

जनरल हबीब ने बहुत प्रयास किया कि नेताजी के शव को सिंगापुर भेजने का प्रबन्ध किया जाये अथवा टोकियो भेजने का। सैनिक अस्पताल के कर्मचारियों ने बताया कि यह संभव नहीं है। नेताजी के जनाजे को विमान में रखने में व्यवहारिक कठिनाई आ रही थी। जनरल हबीब की सम्मति से ही तोईहूक अस्पताल से सम्बद्ध जो पवित्र स्थान था वहाँ पूरे फौजी सम्मान के साथ नेताजी का दाह संस्कार किया गया। नेताजी का दाह संस्कार 20 अगस्त, 1945 को किया गया।

जनरल हबीब के घाव भरने में लगभग तीन सप्ताह लग गये। तीन सप्ताह बाद एक एम्बुलेंस विमान टोकियो जाने वाला था। जनरल हबीब को उसमें स्थान मिल गया और नेताजी के भस्म के साथ सितम्बर को वे टोकियो पहुंच गए।

नेता जी के पार्थिव शरीर का भस्म तीन दिनों तक श्री राममूर्ति के घर रखा गया जो आजाद हिंद संघ की जापान शाखा के अध्यक्ष थे। फिर 14 सितम्बर को नेताजी के भस्म का पात्र सूरीनाम क्षेत्र में रेंकोजी के बौद्ध मंदिर में रख दिया गया।

नेताजी का जीवन भी शानदार था और मृत्यु भी। जिस शान से नेताजी ने इस संसार के सामने अपने कृतित्व को रखा वह निराला था। हमारे देश में हजारों क्रांतिकारियों ने जन्म लिया। देश के लिए अपना बलिदान दिया परन्तु नेताजी के सोच की दिशा अपने आप में अद्वितीय थी। एक अकेला व्यक्ति लाखों लोगों का संगठन कर देश की आजादी के लिए 'प्रबलतम' शत्रु को ललकारे और शत्रु के छाती पर अपना विजय पताका फहरा दे, यह केवल नेताजी ही कर सकते थे। नेताजी के जीवन के किसी भी 'फलक' को देखें तो हर फलक में तीक्ष्णता, तीव्रता तथा ज्योतिर्मय आभा दिखाई पड़ती है।

आज नेताजी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके जीवन की प्रचंडता और प्रखरता का सूक्ष्म प्रभाव आज भी भारतवासियों के हृदय पर अक्षुण्ण है।

आज नेताजी जैसे व्यक्तित्व की परम आवश्यकता है। देश की आजादी का सपना देखने वाले उस महान सपूत के महान राष्ट्र की महानता पर ग्रहण लग गया है और घोटाला, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन की पराकाष्ठा रूपी राहु–केतु भारत माता के जाज्वल्यमान दिव्य छवि को ग्रस रहा है। अन्त में ....

अवसाद पूर्ण जीवन को हास चाहिए।
देश के गद्दारों की लाश चाहिए।
मुमूर्ष मानवता को सांस चाहिए और,
भारत को फिर से सुभाष चाहिए।।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती बाल मंदिर, तेघड़ा, बेगूसराय, बिहार–851133, मो.:–9905416899

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर विशेष

'हमारा गणतन्त्र और समाज'

–मनमोहन कुमार आर्य

हम सब भारत के नागरिक हैं। हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को विगत सैकड़ों वर्षों की दासता के बाद स्वतन्त्र हुआ था। विदेशी दासता से मुक्ति से एक दिन पहले देश के एक तिहाई भाग से अधिक भाग को भारत से अलग कर दिया गया। जिन कारणों से भारत का विभाजन हुआ, उसके बाद भी प्रायः वैसी ही अनेक धार्मिक व सामाजिक समस्यायें आज भी विद्यमान हैं। आजादी से पहले हम अंग्रेजों के गुलाम थे और इससे पूर्व हमें मुसलमानों की दासता और भीषण अत्याचार सहन करने पड़े थे। वैदिक व हिन्दू धर्म के धार्मिक अन्धविश्वासों व तदनुरूप सामाजिक व्यवस्था के कारण मुख्यतः यह पराधीनता व दुःख आये थे। मुसलमानों के देश के बड़े भूभाग पर आधिपत्य से पूर्व भारत में भारतीय आर्य–हिन्दू राजा राज्य करते थे। चाणक्य व विक्रमादित्य के काल में भारत संगठित था और इसकी सीमायें वर्तमान से भी अधिक दूरी तक फैलीं हुईं थीं। किसी समय में अफगानिस्तान, श्रीलंका, नेपाल व बर्मा या म्यमार आदि भी भारत के ही अंग हुआ करते थे। इन सब देशों में एक ही वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति हुआ करती थी। धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक विषमता व विदेशी दासता का मुख्य कारण महाभारत का महायुद्ध और उसके प्रभाव से देश में अव्यवस्था का उत्पन्न होना था। महाभारत के युद्ध में बहुत से लोग मारे गये थे तथा जो बचे थे उन्हें आलस्यजनित अकर्मण्यता ने अपने नियंत्रण में ले लिया था। महाभारत काल तक व उसके बाद चाणक्य व विक्रमादित्य के काल तक सुदूर पूर्व का भारत वैदिक धर्म और संस्कृति की छत्रछाया में उन्नत व विकसित था। वैदिक धर्म का प्रादुर्भाव सृष्टि के आरम्भ काल, 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 118 वर्ष पूर्व हुआ था। तब से पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध तक विश्व में एक ही धर्म व एक ही संस्कृति थी जिसका आधार वेद, वैदिक ग्रन्थों सहित हमारे पारदृष्टा ऋषि–मुनियों के वचन व मान्यतायें होती थी।

देश की आजादी में प्रमुख योगदान महर्षि दयानन्द, उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज और इनके द्वारा किये गये धार्मिक और समाज सुधार के कार्यों को सर्वाधिक है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ही आजादी के प्रणेता थे। सन् 1874 में सत्यार्थ प्रकाश की रचना हुई। इसका संशोधित संस्करण सन् 1883 में तैयार हुआ। इस ग्रन्थ के आठवे समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर रहित, प्रजा पर माता, पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं होता। सम्पूर्ण भारत के साहित्य में स्वराज्य का सर्वोपरि उत्तम होना सबसे पहले सत्यार्थप्रकाश ने ही देशवासियों को बताया। महर्षि दयानन्द के आर्याभिविनय व संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि ग्रन्थों के कुछ अन्य वाक्य भी इसी प्रकार से आजादी के आन्दोलन का मुख्य आधार कहे जा सकते हैं। स्वराज्य सर्वोपरि उत्तम होने का अर्थ है परराज्य या विदेशी राज्य निकृष्ट व बुरा होता है और इसका अनुभव अंग्रेजी राज्य और उससे पूर्व मुस्लिम राज्य में भारत के लोगों ने किया वा भोगा है जो कि इतिहास के पन्नों पर अंकित है। महर्षि दयानन्द जी की एक अन्य बहुत बड़ी देन है कि उन्होंने मत–मतान्तरों किंवा धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया और वेद व वैदिक धर्म को सत्य की कसौटी पर सिद्ध पाया। उन्होंने इसी कारण वेदों का प्रचार किया और अन्य सभी मतों में विद्यमान असत्य व अविद्याजन्य विचार, मान्यताओं, सिद्धान्तों, आस्थाओं, कर्मकाण्डों, कुरीतियों आदि का दिग्दर्शन कराया और मनुष्य जाति की उन्नति के लिए उनका खण्डन किया। इससे यह सिद्ध हुआ कि विश्व में सुख व शान्ति धर्म व समाज संबंधी सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों के द्वारा और इसके पर्याय वैदिक धर्म की स्थापना से ही लाई जा सकती है। ऐसा होने पर ही सभी मनुष्यों में एक भाव व परस्पर एक सुख–दुःख की उत्पत्ति अर्थात् समाजिक समरसता होनी सम्भव है।

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों व विचारों ने स्वतन्त्रता की भावना को उद्बुध व प्रदीप्त किया। देश में स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन चला। कुछ देशवासियों का विचार था कि आजादी अंहिसक आन्दोलन से मिल सकती है और कुछ विद्वानों व चिन्तकों का विचार था कि क्रान्तिकारी कार्यों को अंजाम देकर ही विदेशी हुकमरानों को देश को स्वतन्त्र करने के लिए बाध्य किया जा सकता है। दोनों ही आन्दोलन देश में चले। दोनों का अपना महत्व है। क्रान्तिकारियों को अधिक कुर्बानियां देनी पड़ी व असह्य कष्ट उठाने पड़े। क्रान्तिकारियों के कार्यों से अंग्रेज शासक अधिक विचलित, भयभीत व परेशान होते थे और उन्हें दण्ड के रूप में कठोर यातनायें व मृत्यु दण्ड आदि बहुत कड़े दण्ड देते थे। हमें लगता है कि केवल अहिंसात्मक आन्दोलन से ही अंग्रेजों को देश छोड़ने के लिए विवश नहीं किया जा सका था। अतः क्रान्तिकारी आन्दोलन का अपना विशेष महत्व और योगदान है और इस आन्दोलन के सभी नेता व अनुयायी देशवासियों के पूज्य व आदर्श हैं। इन आन्दोलनों व अंग्रेजों की अपनी परिस्थितियों के कारण देश 15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्र हुआ। एक दिन पूर्व देश का विभाजन इस आधार पर किया गया कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग कौमें हैं और यह साथ मिलकर नहीं रह सकतीं। देश का विभाजन देशभक्तों के लिए दुःखद स्थिति थी। कुछ वरिष्ठ क्रान्तिकारी तो इस सदमे को सहन न कर सके और इस दुःख से पीड़ित होकर कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई।

देश को चलाने के लिए संविधान की आवश्यकता थी। अतः एक संविधान सभा का निर्माण किया गया। भारत के प्रथम कानून मंत्री डा. भीमराव रामजी अम्बेदकर संविधान आलेखन (drafting) सभा के सभापति बनाये गये। संसार के प्रमुख देशों के संविधानों का अध्ययन कर भारत का संविधान बनाया गया जिसे 26 जनवरी, 1950 से लागू किया गया। भारत के संविधान की अनेक विशेषतायें हैं। लोगों को समान अधिकार दिए गये हैं तथा देशवासियों को किसी भी मत व धर्म को मानने की स्वतन्त्रता दी गई है। इसी के साथ नेताओं द्वारा कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा, कुछ मत व वर्गों को विशेष दर्जा या अधिकार व कुछ के लिए अपना कानून आदि का अधिकार दिया गया जो कि विचारणीय है। जैसा भारत में है, ऐसा शायद विश्व के अन्य किसी देश में नहीं होगा। हमारे देश में अनेक पूर्वाग्रहों से युक्त बुद्धिजीवी हैं। यह अपने–अपने प्रकार से विचार करते हैं। कुछ जो कह देते हैं, उनकी बात सुनी जाती है, कुछ की अनसुनी या सही बातों को भी दबा दिया जाता है। यह सब कुछ प्रायः सत्तारूढ़ दल के मुख्य नेताओं पर निर्भर करता है। हम सब नागरिकों के लिए एक समान रूप से स्वतन्त्रता की बात करते हैं परन्तु कई बार यह बहुत से मामलों में दिखाई नहीं देती। आज देश में एक धनिक और एक निर्धन वर्ग पैदा हो गया। निर्धन वर्ग भी ऐसा कि जिसके पास दो समय का भोजन, अपनी छत व अच्छे वस्त्र व शिक्षा के लिए आवश्यक न्यूनतम धन भी नहीं है और वहीं कुछ लोगों के पास इतना अधिक धन है कि वह उसका दुरुपयोग व कर चोरी करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। कहा जाता है कि संविधान ने सबको समान अधिकार दिये हैं परन्तु समाज में यह देखने को कम ही मिलता है। शिक्षा व चिकित्सा निःशुल्क होनी चाहिये परन्तु यह आज करोड़ो लोगों की क्षमता से बहुत दूर है। सुरक्षा भी ईश्वर के भरोसे है। कई बार बड़े–बड़े हादसे हो जाते हैं, जनता विरोध करती है, कुछ कानूनों में परिवर्तन किया जाता है परन्तु अपराधों में रोक नहीं लगती। समस्याओं के हल करने में भी राजनीतिक दलों की वोट बैंक की नीति आड़े आती है। देश को आजादी प्राप्त हुए। आज का समाज अनेक असमान मान्यताओं वाले मत–मतान्तरों, अन्धविश्वासों, पाखण्डों, अशिक्षा, अज्ञान, शोषण, अन्याय, असुविधाओं, अपराधों, निर्धनता, असमानता व अनेक दुःखों से युक्त है। सभी देशवासी एक विचार, एक भाव, एक सुख दुःख, एक हानि–लाभ, परस्पर भाई बहिन के समान व्यवहार आदि गुणों से युक्त नहीं हो सके और शायद कभी हो भी नहीं सकेंगे।

हमें यह भी लगता है कि परिस्थितियोंवश हमारे संविधान का निर्माण करते समय वेदों, दर्शनों, मनुस्मृति व नीति ग्रन्थों का अध्ययन कर उनकी अच्छी बातों को संविधान में सम्मिलित नहीं किया गया, यदि किया जाता तो अच्छा होता। अच्छे विचार व बातें तो कहीं से भी मिलें, ग्रहण की जानी चाहिये। वेदों और दर्शनों का सिद्धान्त है कि जिससे यह संसार बना और चल रहा है, वह एक सत्ता ईश्वर है जो निराकार, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, चेतन–तत्व, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। इस शत प्रतिशत सही बात को भी न तो संविधान में स्थान प्राप्त हुआ और न ही देशवासी इसके अनुसार व्यवहार करते हुए दिखाई देते हैं। वैदिक काल में शिक्षा निःशुल्क, अनिवार्य व एक समान होती थी। सबको समान सुविधायें दिये जाने का विधान था तथा किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता था। यह उच्च आदर्श व नियम मध्यकाल में भुला देने के कारण ही देश का पतन हुआ और पराधीनता का कारण बना। आज हमारे निर्धन देशवासी शिक्षा के अभाव से ग्रस्त है। ईश्वर ने उन्हें मनुष्य जीवन तो दिया परन्तु अनेक व्यक्ति ऐसे भी हैं जो देश व समाज की व्यवस्था के कारण पशुओं जैसा जीवन जीने के लिए बाध्य हैं। बुन्देलखण्ड के आज भी निर्धन किसान व भूमिहीन साधनों के अभाव में घास की बनी रोटी बिना दाल व सब्जी तथा चावल के खाने के लिए मजबूर हैं। यह कैसा देश है जहां अरबपति व खरब पति लोग रहते हैं और अपने ही देश के बन्धुओं के प्रति उनमें दया, प्रेम, करूणा का भाव नहीं है। इसका अर्थ है कि वह स्वयंभू विचार वाले संवेदनाहीन मनुष्य हैं और अन्य मनुष्यों को अपना परिवार और ईश्वर की सन्तान नहीं मानते। अतः आज आवश्यकता है कि एक स्वस्थ, शिक्षित, शोषण व अन्याय मुक्त, सभी के लिए घर, वस्त्र, भोजन, चिकित्सा, सामाजिक सुरक्षा व सत्य वैदिक ज्ञान से युक्त समाज व देश बनाने की दिशा में हमारे सभी श्रेष्ठ व अन्य बुद्धिजीवी विचार करें और एक आदर्श भारत के निर्माण की रचना व संगठन में अपना योगदान दें।

जनतन्त्र व लोकतन्त्र इसी लिए आदर्श माने जाते हैं कि इसमें वैचाारिक व क्रियात्मक रूप से जनता को शिक्षा, ज्ञान, पक्षपात व अन्याय मुक्त वातावरण मिलता है। सभी को अपनी आजीविका मिलती है जिससे वह अपने जीवन को स्वस्थ व निरोग रखते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो सकें। इसे अभ्युदय और निःश्रेयस प्राप्त करने में संलग्न जीवन भी कह सकते हैं। हम जितना भौतिकवादी बनेंगे, जो कि आज बन गये हैं, उतना ही हम जीवन के लक्ष्यों से दूर होते जायेंगे और हमारा यह मनुष्य जीवन उद्देश्य व लक्ष्य से भटका हुआ जीवन ही कहा व माना जायेगा। हम चाहते हैं कि गणतन्त्र दिवस पर समाज में निर्धनता दूर करने, सबको समान, निःशुल्क, अनिवार्य शिक्षा प्राप्त कराने तथा सबके लिए निःशुल्क चिकित्सा, न्याय व सुरक्षा की गारण्टी युक्त वातावरण के निर्माण का प्रयास होना चाहिये। इन विषयों पर बहस हो, योजनायें बनें और सभी देशवासी इस कार्य में जुट जायें। अमीरी व गरीबी की खाई कम होनी चाहिये। अधिक सम्पत्ति वालों पर अधिक कर लगाकर उसे निर्धन जनता के दुःख व दर्द दूर करने में, बिना भ्रष्टाचार किये, व्यय करना चाहिये। सरकार की ओर से ऐसी योजना बने जिससे वेदों और वैदिक साहित्य पर अनुसंधान व उसके मानव जीवन पर प्रभावों का अध्ययन कर उससे लाभ उठाने के लिए प्रभावशाली प्रयत्न किये जायें। हम आशा करते हैं कि पाठक लेख पर सदभावपूर्ण रीति से विचार करेंगे।

– 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001
फोन : 09412985121

ओ३म्

धार्मिक पाखण्ड, नशाखोरी, अश्लीलता एवं कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध

स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी इन्द्रवेश

जन–चेतना यात्रा का भव्य आयोजन

दिनांक : 5 फरवरी, 2018 से 11 फरवरी, 2018 तक

प्रारम्भ : दून वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, सोनीपत (आई.टी.आई. चौक)

समापन : आर्य समाज मंदिर, सिरसा

समाज में निरन्तर बढ़ती हुई नशाखोरी, युवा पीढ़ी के चारित्रिक पतन एवं अश्लीलता, कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं पर हो रहे अत्याचार तथा बढ़ते हुए अन्धविश्वास व पाखण्ड आदि कुरीतियों के विरुद्ध जागृति पैदा करने के लिए तथा पर्यावरण सुरक्षा हेतु स्वच्छता अभियान व बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के प्रति संकल्प दिलाने के लिए आर्य समाज युवा निर्माण अभियान की ओर से 5 फरवरी, 2018 से 11 फरवरी, 2018 तक निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार सोनीपत से सिरसा की भव्य जन–चेतना यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। यात्रा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी, युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क आदि सभाओं को सम्बोधित करेंगे। इनके अतिरिक्त चौ. हरिसिंह सैनी पूर्व मंत्री हिसार, श्री इन्द्रजीत आर्य नरवाना, श्री सुभाष श्योराण जीन्द, श्री अतर सिंह स्नेही, श्री जयसिंह ठेकेदार, श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, श्री सौरभ फरमाना, श्री मनोज पहलवान पार्षद, श्री जसवन्त सिंह देशवाल, चौ. अजीत सिंह पूर्व विधायक, श्री शमशेर सिंह आर्य एवं चौ. युद्धवीर सिंह प्रधान आर्य समाज सिरसा आदि का भी सान्निध्य प्राप्त होगा। इस समाजोपयोगी कार्य में आप सभी का तन–मन–धन से सहयोग अपेक्षित है। यात्रा के निर्धारित कार्यक्रमों में आप अपनी भागीदारी अवश्य करें।

कार्यक्रम

5 फरवरी, 2018

1.	दून वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, सोनीपत (निकट आई.टी.आई. चौक) संयोजक : प्रिं. आजाद सिंह	प्रातः 9 से 11 बजे
2.	जनचेतना रैली सोनीपत	दोपहर 11 से 12 बजे
3.	रोहट	1 बजे
4.	खरखोदा	2.30 बजे
5.	रोहणा	3.30 बजे
6.	छारा	5 बजे
7.	झज्जर	7 बजे (रात्रि पड़ाव)

6 फरवरी, 2018

1.	धौड़	प्रातः 11 बजे
2.	बेरी	दोपहर 12 बजे
3.	सुण्डाना	मध्यान्ह 1 बजे
4.	ककराना	सायं 3 बजे
5.	मोखरा	सायं 5 बजे
6.	फरमाना	सायं 7 बजे (रात्रि पड़ाव)

7 फरवरी, 2018

1.	निन्दाना	प्रातः 9 बजे
2.	लाखनमाजरा	प्रातः 11 बजे
3.	आहूलाना	दोपहर 12 बजे
4.	गोहाना	सायं 2 बजे
5.	बुटाना	सायं 4 बजे
6.	नूरनखेड़ा	सायं 5 बजे
7.	गंगाना	सायं 7 बजे (रात्रि पड़ाव)

8 फरवरी, 2018

1.	जागसी	प्रातः 9 बजे
2.	सिवानामाल	प्रातः 10 बजे
3.	अलेवा	दोपहर 12 बजे
4.	राजौन्द	मध्यान्ह 1 बजे
5.	कैथल	सायं 3 बजे
6.	चान्दपुर	सायं 5 बजे
7.	अहीरका	सायं 7 बजे
8.	जीन्द	रात्रि 8 बजे (रात्रि पड़ाव)

9 फरवरी, 2018

1.	खटकड़	9 बजे
2.	बड़ौदा	प्रातः 10 बजे
3.	उचाना	प्रातः 11 बजे
4.	नरवाना	दोपहर 12 बजे
5.	बुढायन	सायं 2.30 बजे
6.	कापड़ो	सायं 4 बजे
8.	हांसी	सायं 7 बजे (रात्रि पड़ाव)

10 फरवरी, 2018

1.	उमरा	प्रातः 9 बजे
2.	लाडवा	प्रातः 10 बजे
3.	नलवा	प्रातः 11 बजे
4.	मुकलान	दोपहर 12 बजे
5.	हिसार	मध्यान्ह 1 बजे
6.	सिवानी बोलान	सायं 3 बजे
7.	कुलेरी	सायं 4 बजे
8.	गोरखपुर	सायं 5 बजे
9.	गुरुकुल मताना डिग्गी	सायं 7 बजे (रात्रि पड़ाव)

11 फरवरी, 2018

फतेहाबाद	प्रातः 11 बजे
समापन समारोह आर्य समाज मंदिर सिरसा	प्रातः 12 बजे

उपरोक्त कार्यक्रमों में परिवर्तन करने का अधिकार समिति को होगा। इन सभी कार्यक्रमों में सर्वश्री प्रिं. आजाद सिंह, जय प्रकाश आर्य, प्रवीण आर्य, मंजीत सिंह दहिया, रमेश कौशिक, आर्षव्रत शास्त्री, कर्णसिंह एडवोकेट, जय भगवान आर्य, सुभाष आर्य, डॉ. धर्मवीर आर्य, धर्म सिंह नादान, वीर देव आर्य, दिलबाग सिंह आर्य, रामवीर आर्य, हरिओम सरपंच, ईश्वर सिंह आर्य, प्रदीप ढाका, राजवीर आर्य, डॉ. राजेश आर्य, नफेसिंह आर्य, देवेन्द्र आर्य, पवन आर्य जगवीर सिंह शास्त्री, जसवीर सांगवान, नरेन्द्र सांगवान, बलराम आर्य, कृष्ण आर्य, देवेन्द्र सरपंच, धर्मवीर पूर्व सरपंच, डॉ. होश्यार सिंह, जयपाल आर्य, किरण पाल आर्य, सत्यवीर आर्य, दर्शन सिंह मालखेड़ी, श्यामलाल आर्य, अमित गुप्ता, ईश्वरदत्त, सुरेन्द्र आर्य, मनीष आर्य, दयानन्द आर्य, रणवीर राठी, मा. सतवीर सिंह आर्य, सोनू आर्य, कर्मपाल आर्य, सूरजमल आर्य, मा. अजीत पाल आर्य, मा. अशोक आर्य, धूलाराम आर्य, इन्द्रजीत आर्य, विजय कुमार आर्य, नरेश कुमार आर्य, अश्वनि आर्य, अनिल आर्य, रमेश आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, सत्यपाल पूर्व सरपंच, सूरजपाल पहलवान, सज्जन सिंह राठी, सुभाष आर्य, चौ. धर्मवीर आर्य, आत्म प्रकाश, कृष्ण कुमार बब्बर, दलबीर सिंह आर्य, जयवीर सोनी, देवेन्द्र सैनी, रमेश आर्य, अनिल आर्य, शमशेर आर्य, हरि सिंह भूषण, बंसीलाल आर्य, भीषम शास्त्री, जगदीश सींवर, आर्य वीरेन्द्र पहलवान, आर्य प्रमोद, वैद्य रमेश योगाचार्य, श्री द्वारकादास, डॉ. प्रविन्द्र, डॉ. किरण कलकल, पं. पुरुषोत्तम, प्रिं. जसवीर सिंह धनखड़, रामवीर शर्मा, विद्यानन्द, बलवान सिंह आर्य, राजेन्द्र आर्य, एकता आर्या, डॉ. शीशराम, मोनिका आर्या, राजेश काजल, जयपाल आर्य, रामकुमार आर्य, महावीर कुण्डू, सतपाल सांगवान, भगत सिंह, रघुवीर सिंह, ईश्वर सिंह, धर्मवीर सरपंच, जगमति मलिक, बजरंगलाल आर्य आदि का विशेष सहयोग रहेगा।

निवेदक

बहन पूनम आर्या	बहन प्रवेश आर्या	ऋषिराज शास्त्री	आचार्य दीक्षेन्द्र आर्य
अध्यक्ष	महासचिव	महामंत्री	प्रधान
बेटी बचाओ अभियान	बेटी बचाओ अभियान	सार्व. आर्य. यु. परिषद, हरियाणा	सार्व. आर्य. यु. परिषद, हरियाणा

प्रान्तीय कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, ग्राम टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा), मो.:– 09354840454

एक ऐतिहासिक धरोहर
महर्षि दयानन्द सरस्वती तपोभूमि छलेसर (अलीगढ़)

– डॉ. जयसिंह सरोज

गाँव छलेसर जहां सन् 1870 में महर्षि दयानन्द सरस्वती के कर कमलों द्वारा स्थापित यज्ञ वेदी एवं संस्कृत पाठशाला के भग्नावशेष आज भी महर्षि की गौरव गाथा संजाये धरोहर के रूप में विद्यमान है, अलीगढ़ से 21 किमी. तथा सुप्रसिद्ध सर्वदानन्द गुरुकुल साधु आश्रम से 6 किमी. की दूरी पर आम के सुन्दर बगीचों के मध्य शस्य श्यामला माटी पर पक्के रास्ते पर वसा है।

अलीगढ़ रियासत के सुप्रसिद्ध राजा भी बलवन्त सिंह संस्थापक राजा बलवन्त सिंह कालेज आगरा जिन पर ऋषिवर के विचारों का गहरा प्रभाव था की ससुराल इसी गांव में थी। इनकी धर्मपत्नी रानी श्रीमती वेसती जू अपने हवलदार ठा. तालेवर सिंह तथा राज परिवार के सुप्रसिद्ध पहलवान रतीराम जो बाद में ऋषिवर का अनन्य भक्त बन गया था के साथ महर्षि के दर्शनार्थ कर्णवास (बुलन्दशहर) आयीं थी तथा महर्षि से गायत्री मंत्र की दीक्षा ली थी। इन्हीं के परिवार के रईस जमीदार ठा. मुकुन्द सिंह स्वामी जी के पूर्ण समर्पित भक्त थे।

इसी पावन धरा पर स्वामी दयानन्द सरस्वती अनेक बार पधारे तथा नित्य यज्ञ, बृहद यज्ञ, शास्त्रार्थ एवं वेदोक्त उपदेश दिये। अब भी इस स्थल पर यदा–कदा यज्ञ के कार्यक्रम चलते रहते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की कहानी ठा. मुकुन्द सिंह की जबानी

ठा. मुकुन्द सिंह एक सज्जन प्रवृत्ति के विचारवान पौराणिक व्यक्ति थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. 1925 तदनुसार मई सन् 1868 व कार्तिक सं. 1925 तदनुसार अक्टूबर, 1868 के मध्य कर्णवास (बुलन्दशहर) में प्रवास कर रहे थे। उनके वैदिक उपदेशों एवं तात्कालिक पौराणिक विद्वान पं. अम्बादत्त पर्वती, पं. हीरावल्लभ के शास्त्रार्थ में पराजय व मूर्तियों के गंगा नदी में प्रवाह की चर्चायें चतुर्दिक गाँग–गाँव में जोरों पर थी। इन्हें सुनकर जिज्ञासु ठाकुर साहब कर्णवास गये। शरीर पर गंगारज लगाये कोपीन धारी बाल ब्रह्मचारी अवधूत के दर्शन किये। स्वामी जी के सारगर्भित, तार्किक, विज्ञान परक उपदेशों को सुनने का इन्हें मात्र दो घंटे का ही शुभ अवसर प्राप्त हुआ। परन्तु इस क्षणिक मुलाकात ने इनका हृदय परिवर्तन कर दिया। इन्हें मूर्ति पूजा से घृणा हो गयीं अपने गांव वापिस आये और 30 स्थानों पर स्थापित पथवारी देवता, चामुण्डा देवता, महादेव, नगरसेन देवता, लागर देवता, सैय्यद देवता आदि की मूर्तियाँ एकत्रित कराकर कालिन्दी (काली) नदी में प्रवाहित कर दी। इनके इस कृत्य से क्षेत्र में भूचाल सा आ गया तथा उनकी विरादरी के 60 गांव के चौहानों ने ही नहीं बल्कि अन्य ब्राह्मण, वैश्य, लोधी, राजपूत आदि जातियों ने इनका समाज से बहिष्कार कर दिया। इससे यह किंचित भी न घबड़ाये और न ही विचलित हुए तथा ऋषिवर के कट्टर अनुयायी बने रहे।

छलेसर में स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रथमवार आगमन

इनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि महर्षि इनकी जमींदारी के गांव छलेसर एक बार अवश्य आयें। इसी अभिलाषा को हृदय में संजोये यह स्वामी जी से मिलने सोरों (कासगंज) गये। जब इन्हें पता चला कि ऋषिवर कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी सं. 1927 (सन् 1870) को रामघाट आ रहे हैं तो वह रामघाट पहुंचे तथा स्वामी जी से छलेसर पहुंचने का आग्रह किया। स्वामी जी ने तत्क्षण इनके निवेदन को स्वीकार कर लिया।

स्वामी जी मार्गशीर्ष वदी चतुर्थी सं. 1927 अर्थात् 12 नवम्बर, 1870 दिन शुक्रवार को छलेसर के लिए प्रस्थान किये। स्वामी जी के आने का समाचार हवा की तरह चारो ओर फैल गया। ठाकुर साहब इनके भाई मुन्ना सिंह, ठा. भोलासिंह आदि के हर्षोल्लास का तो ठिकाना न था। हर व्यक्ति अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा था। यह ढाई सौ व्यक्तियों के साथ नंगे पैर काली नदी के तट पर जहां स्वामी जी पहुंच रहे थे, पहले ही पहुंच गये। सभी ने स्वामी जी के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया तथा इन्होंने पुष्पहार गले में डालकर चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। इनके द्वारा यथा योग्य सम्मान एवं सत्कार हेतु छत्र एवं पालकी का प्रबन्ध था। परन्तु स्वामी जी ने सबके साथ पैदल ही चलकर छलेसर जाने का निश्चय किया। छलेसर पहुंचकर स्वामी जी आम की वाटिका में ठहरे। यहां क्षेत्र के धुरन्धर कहे जाने वाले पौराणिक विद्वान पं. दुर्बासा, पं. हरिकृष्ण गोपालपुर, अतरौली के इस्लाम के विद्वान काजी इम्दाद अली आदि अनेकानेक व्यक्तियों ने स्वामी जी के साथ शास्त्रार्थ एवं शंका समाधान किया और अन्ततोगत्वा स्वामी जी की वेदानुकूल बातों को स्वीकार किया। यहां स्वामी जी के प्रवचनों को सुनने के लिए 400–500 व्यक्ति नित्य आते थे। ऐसा लगता था मानो छलेसर में धर्म के कुम्भ का मेला लगा हो।

स्वामी जी ने छलेसर में यज्ञवेदी एवं संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। इसी यज्ञ वेदी में स्वामी जी नित्य यज्ञ करते थे। स्वामी जी ने इन्हें इनके भाई मुन्ना सिंह, ठा. भोलासिंह को यज्ञोपवीत धारण कराया। पाठशाला के मुख्य अध्यापक धौरऊ निवासी वैदिक विद्वान एवं व्याकरणाचार्य कुमर सेन थे।

स्वामी जी का दूसरी बार छलेसर में पदार्पण

स्वामी जी दूसरी बार अपने शिष्य खेमकरन के साथ पौष सुदी सं. 1930 अर्थात् 20 सितम्बर 1873 को छलेसर पधारे तथा संस्कृत पाठशाला में रूके। स्वामी जी को सुनने असंख्य लोग नित्य प्रति आते थे। यहां महोत्सव जैसा दृश्य दृष्टिगोचर होता था।

राजा जयकिशन दास सी.एस.आई. डिप्टी कलेक्टर अलीगढ़ की स्वामी जी से भेंट

इस समय तक स्वामी जी की विद्वता की ख्याति चारो ओर फैल चुकी थी। हर बुद्धिजीवी उनसे सम्पर्क करने के लिए उत्सुक था। राजा जयकिशन दास ने भी जब स्वामी जी के सम्बन्ध में सुना तो उन्होंने इनसे (ठा. मुकुन्द सिंह) से स्वामी जी के छलेसर पधारने पर दर्शन करने की इच्छा प्रगट की। ठाकुर साहब की सूचना पर राजा साहब ने हरदुआगंज तक सवारी से तत्पश्चात् घोड़े पर सवार होकर सुबह 9 बजे पहुंचकर स्वामी जी के दर्शन किये तथा ज्ञान लाभ प्राप्त किया। राजा साहब ने स्वामी जी से अलीगढ़ पधारने का अनुरोध किया जिसे ऋषिवर ने स्वीकार कर लिया। स्वामी जी दिनांक 26 दिसम्बर, 1873 को हाथी की सवारी से अलीगढ़ पधारे उनके साथ 25 घुड़सवार भी थे। जिसमें ठा. मुकुन्द सिंह, मुन्ना सिंह, भोला सिंह प्रमुख थे जो स्वामी जी के साथ रहे। यहाँ स्वामी जी अचलताल के पास चाऊलाल की आम की वाटिका वर्तमान में सुनाहारों वाली गली में ठहरे तथा नित्य वेदानुकुल उपदेश दिये। यहां स्वामी जी से अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैय्यद अहमद खां भी दर्शनार्थ आये। बहुत कम लोग जानते है कि राजा जयकिशन दास जी ने स्वामी जी से दिये जा रहे उपदेशों को लेखबद्ध करने का अनुरोध किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन सन् 1875 में स्वयं राजा जी ने अपने धन से कराया। अलीगढ़ से स्वामी जी 22 जनवरी, 1874 को हाथरस को प्रस्थान कर गये।

तीसरी बार स्वामी जी का छलेसर आगमन

स्वामी जी तीसरी बार 4 दिसम्बर 1876 को अतरोली रेलवे स्टेशन पहुंचे। उनके साथ 5–6 व्यक्ति थे। वहां से स्वामी जी सीधे छलेसर आये तथा लगभग एक सप्ताह रूके। इस बार भी स्वामी जी नित्य यज्ञ करते एवं उपदेश देते थे तथा बड़ी संख्या में लोग उनके व्याख्यान सुनने आते थे। लाल लिटन वायसराय ने महारानी विक्टोरिया को पूर्ण साम्राज्ञी का दर्जा दिलाने के लिए दिल्ली में एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें राजाओं जमींदारों तथा धर्माचार्यों को आमन्त्रित किया। स्वामी जी छलेसर से सीधे ठा. मुकुन्द सिंह आदि के साथ दिल्ली चले गये। ठा. साहब अपने साथ शामियाना, डेरा दरियां तथा अन्य सामान लेकर गये। इस कार्यक्रम में सर सैय्यद अहमद खां, राजा जयकिशन, कुंवर सेन आदि भी स्वामी जी के साथ थे। पौराणिकों के व्यवधान के कारण स्वामी जी 'स्वराज्य' एवं सुराज्य अवधारणा को पंचायत में प्रस्तुत करने में सफल न हो सके।

हृदयांचल से –

छलेसर की यह पावन माटी जहां 147 वर्ष पुरानी ऋषिवर द्वारा स्थापित यज्ञ वेदी व संस्कृत पाठशाला के भग्नावशेष आज भी स्वामी जी की याद को ताजा कर रहे हैं। गंगा की भांति आर्यों की पवित्र तीर्थ स्थली है। स्थानीय आर्यजनों के अनेकानेक प्रयत्नों के बावजूद यह स्थल यथावत पड़ा है।

वर्ष 2016–2017 में पुनः इस स्थल को ऐतिहासिक बनाने के लिए डॉ. जय सिंह सरोज पूर्व उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, पं. देव नारायण भारद्वाज, बाबू सिंह आर्य, इं. लटूरी सिंह, के. एस. आर्य एवं गांव के बुद्धिजीवी लोगों के सद्प्रयत्नों से गांव की प्रधाना श्रीमती गुरजेश देवी धर्मपत्नी श्री कालीचरण सिंह ने दिनांक 10 नवम्बर, 2016 को सर्वसम्मति से महर्षिदयानन्द सरस्वती तपोभूमि के नाम से प्रस्ताव पारित कराया।

प्रस्तावानुसार दिनांक 23 अक्टूबर, 2017 (सोमवार) को इस पवित्र स्थल पर शिलान्यास सम्पन्न हुआ जिसमें डॉ. जयसिंह 'सरोज' इं. लटूरी सिंह, सर्वदानन्द गुरुकुल साधु आश्रम के प्राचार्य श्री जीवन सिंह, आचार्य विन्नमी सिंह, भूदेव आर्य, प्रधाना के पति श्री कालीचरण सिंह, ठा. अभय कुमार सिंह, ठा. रघुराज सिंह, योगेन्द्र सिंह, मोहन सिंह, सत्य प्रकाश सिंह, अमर दीप सिंह, देवेन्द्र सिंह, श्रीपाल सिंह, ढालसिंह, उदयपाल सिंह आदि मौजूद थे। इस तपोभूमि की चारदीवारी लगभग चार लाख रुपये व्यय कर पंचायत ने वनवादी है। इसे भव्यता प्रदान करने का उत्तरदायित्व हम सबका है। यहाँ डी.ए.वी. जैसे कालेज महर्षि दयानन्द कीर्ति स्तम्भ, यज्ञवेदी पर भव्य यज्ञशाला आदि का निर्माण हो सकता है। आइये! हम सब बन्धु एवं मातृशक्ति इस पुण्य कार्य में अपनी–अपनी आहुति प्रदान कर इसे ऐतिहासिक धरोहर के रूप में विकसित करने का संकल्प ले।

– 48 एच.आई.जी., अवन्तिका फेस–1, रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ. प्र.), मो.:–09411563103

मेला श्री रामनगरिया पांचाल घाट फर्रुखाबाद में चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद के तत्वावधान में मानव उत्थान विश्व कल्याण व वैदिक धर्म प्रचार हेतु मेला क्षेत्र श्री रामनगरिया, पांचाल घाट, फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश में 7 से 31 जनवरी, 2018 तक भव्य चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः 7 से 8 बजे तक योग शिविर, प्रातः 9.30 से 11 बजे तक यज्ञ एवं उपदेश और अपरान्ह 2 से 5 बजे तक भजन, उपदेश एवं आध्यात्मिक प्रवचन का कार्यक्रम निरन्तर चल रहा है। इस सम्मेलन में 22 जनवरी, 2018 को बसन्त पंचमी तथा प्रातः 11 बजे भव्य शोभा यात्रा निकाली जायेगी। 28 जनवरी, 2018 को विराट कवि सम्मेलन तथा समय–समय पर राष्ट्ररक्षा, वेद विज्ञान, युवा जागृति, संस्कृत रक्षा तथा संत तथा नारी सशक्तिकरण आदि विषयों पर सम्मेलन आयोजित किये गये हैं। इस भव्य कार्यक्रम में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान, भजनोपदेशक तथा सम्मानित अतिथिगण भारी संख्या में पधारकर समय–समय पर श्रोताओं को धर्मलाभ पहुँचायेंगे। भारी संख्या में पधारकर इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम को सफल बनायें।

– आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री, प्रधान जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश

स्वामी श्रद्धानन्द का 91वाँ बलिदान दिवस
स्वामी श्रद्धानन्द ने मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्यधारा में आने की सलाह दी

"भारतीय पुनर्जागरण के उत्तरवर्ती काल में प्रखर राष्ट्रवादी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द बेजोड़ धरोहर सिद्ध हुए। वह आत्मविस्मृति के अन्धकार में प्रकाश की किरण बनकर आये स्वामी जी ने विगत विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा हिन्दुओं के जबरन धर्मान्तरण पर सवाल खड़ा कर दिया। इसी सवाल ने आत्मरक्षार्थ शुद्धि आन्दोलन को जन्म दिया। उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती जी ने काशी आर्य समाज में आयोजित श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह में आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

आर्य व्याख्याता पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतलाया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जामा मस्जिद दिल्ली की वेदी में मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ने की बेशकीमती सलाह दी थी।

पूर्व सभासद श्री लीलाराम सचदेवा ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितोत्थान तथा विधवाओं के पुनर्स्थापन के क्षेत्र में हिन्दुओं को जाग्रत कर अपूर्व योगदान दिया।

अध्यक्षीय भाषण में श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रतिपादित गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली द्वारा ही राष्ट्र का सांस्कृतिक संरक्षण सम्भव है।

संगोष्ठी में सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, डॉ. विशाल सिंह, प्रतिमा सिंह, रमेश जी आर्य, एस.एन. प्रसाद कुशवाहा, शशि शेखर पाण्डे, बृजभूषण सिंह, शम्भूनाथ जी ने भी उपस्थित होकर अपने विचार रखे, मोतीलाल आर्य, रमेश जी आर्य, लल्लन जी आर्य, विभा आर्य, हेमा आर्य ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति की, कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ। कार्यक्रम में डॉ. विशाल सिंह ने आगन्तुकों का स्वागत किया अध्यक्षता श्रीनाथ सिंह ने तथा संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री ने किया। मोती लाल आर्य ने शांति पाठ कराया।

— प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री

'शोभायात्रा के गीत' शीर्षक ग्रन्थ का लोकार्पण

गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) की स्वर्णजयन्ती महोत्सव के अवसर पर 'अध्यात्म पथ' के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की 'शोभायात्रा के गीत' नामक पुस्तक का लोकार्पण पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

इस पुस्तक में प्रभातफेरी, शोभायात्रा, ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, आर्य समाज के स्थापना दिवस आदि पावन अवसरों पर गाये जाने वाले प्रेरक एवं आत्मोत्कर्ष परक गीतों का अनूठा संग्रह है।

पुस्तक का लोकार्पण करते हुए आचार्य बालकृष्ण जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व, उस शिक्षा की आवश्यकता और वर्तमान समय में गुरुकुलों के विस्तार पर बल दिया।

मंचस्थ गणमान्य विद्वानों ने 'शोभा यात्रा के गीत' शीर्षक पुस्तक के संकलनकर्ता एवं सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को इस उत्तम कृति के लिए बधाई दी। इस शुभावसर पर स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी, श्री सुदर्शन भगत जी (केन्द्रीय राज्यमंत्री), ठा. विक्रम सिंह जी (अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी), कैप्टन रूद्रसेन सिन्धु जी (प्रधान गुरुकुल न्यास) आदि गणमान्य लोग मंच पर शोभायमान थे।

विशाल पण्डाल में हजारों की संख्या में प्रबुद्ध श्रोता, मूर्धन्य संन्यासीगण, विद्वतवर्ग, राजनेता, आर्यनेता उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी ने किया।

— डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, साहित्य सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में आर्य समाज सांताक्रुज मुम्बई में

वेदों में शिक्षा विज्ञान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक : 24 व 25 मार्च, 2018

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 24 व 25 मार्च, 2018 को स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली) की अध्यक्षता में आर्य समाज सांताक्रुज मुम्बई में 'वेदों में शिक्षा विज्ञान' के विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया है जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी (दिल्ली) एवं स्वामी धर्मानन्द जी (गुरुकुल आमसेना) विशेष अतिथि रहेंगे।

इस संगोष्ठी में गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्या तथा गुरुकुलों के प्रतिष्ठित स्नातक, गुरुकुलों की वर्तमान समय में उपयोगिता तथा एकरूपता, आर्ष पाठ विधि की महत्ता, इसमें उपस्थित बाधाएँ, गुरुकुलों के स्थान पर अन्य शिक्षा प्रणाली का प्रचलन, आर्य समाज के लिए हितकारी या अहितकारी, अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूत्र आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

— आचार्य सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई
डी–309, मिल्टन अपार्टमेंट, जुहू कोलीवाड़ा, मुम्बई,
मो.:– 9869668130

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस भव्यता के साथ मनाया

23 दिसम्बर, 2017 को प्रतिवर्ष की भांति उल्लासपूर्वक इस वर्ष भी आर्य समाज मंदिर आरा में भोजपुर जिले की सभी आर्य समाजों के सदस्यों की उपस्थिति में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आरा एवं डी.ए.वी. सेकेण्ड्री स्कूल सरैया के बालक–बालिकाओं के द्वारा वैदिक संस्कृति पर आधारित प्रवचन एवं भजन के माध्यम से प्रकाश डाला साथ ही आज की ज्वलन्त समस्याओं कन्या भ्रूण हत्या, नारी उत्पीड़न, जाति–पाति के विरुद्ध विचार व्यक्त किये। इसके साथ ही राष्ट्रधर्म पर तथा राष्ट्र को उन्नत करने के विचारों को भी व्यक्त किया गया।

इस अवसर पर श्री संजय सिन्हा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल आरा एवं श्री संजय श्रीवास्तव डी.ए.वी. सेकेण्ड्री स्कूल सरैया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रारम्भ आचार्य मनु जी के ब्रह्मत्व में वैदिक यज्ञ से किया गया तथा श्री कामता प्रसाद आर्य एवं श्री संजय सिन्हा के द्वारा झण्डोत्तोलन का कार्य किया गया।

इस अवसर पर श्री आर.बी. सिंह बाम्बे आर्य समाज, डॉ. जितेन्द्र तोमर, डॉ. सम्पूर्णानन्द गुप्ता, श्री सिद्धेश्वर शर्मा, श्री हरि नारायण आर्य, श्री मीणा आर्या, श्री कामेश्वर प्रसाद, श्रीमती वविता आर्या, श्री इन्द्रमणि सिंह लसाढ़ी, श्री वैद्यनाथ आर्य, श्री अविनाश कुमार आर्य सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इस अवसर पर डी.ए.वी. के प्रधान जी को यजुर्वेद प्रदान कर सम्मानित किया गया तथा भोजपुर जिले से आये आर्य समाज के अधिकारियों को सत्यार्थ प्रकाश देकर श्री कामता प्रसाद आर्य प्रधान आर्य समाज आरा द्वारा स्वागत किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन श्री कामता प्रसाद आर्य प्रधान आर्य समाज शाहाबाद ने किया। — कामता प्रसाद आर्य

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

13 व 14 जनवरी को प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 13 जनवरी को देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से पधारे मूर्धन्य विद्वानों ने "उपनिषदों में विविध विधाएं" विषय पर सम्पन्न राष्ट्रीय वैदिक शोध संगोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत किये। संगोष्ठी में दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो– शारदा व पंकज कुमार मिश्र आदि 50 विद्वान् सम्मिलित हुए। वहीं 14 जनवरी को मकर सौर संक्रान्ति के पावन पर्व पर नए ब्रह्मचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुलीय छात्रों ने शारीरिक बलप्रदर्शन व आश्चर्यचकित कर देने वाले आसनों का प्रदर्शन मल्लखम्भ पर किया। गुरुकुल के कुलाध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज ने कहा कि– "उपनिषदों में मधु एवं माधवी दोनों विधाएं हैं", मधु अर्थात् स्नेह, जब यह स्नेह गुरु का शिष्य के प्रति होता है तो वह मधुविधा और वही स्नेह जब शिष्य का गुरु के प्रति होता है तो वह माधवीविधा है और यह स्नेह आज भी गुरु और शिष्य के मध्य अत्यावश्यक है। साथ ही पूज्य गुरुजी का कहना है कि "उत्सव लोगों के परस्पर मेल का स्थल है तथा आज यह मेलभाव देश की अखण्डता व अस्मिता को बनाए रखने के लिए अत्यावश्यक है।" शीत का अत्यन्त प्रकोप होते हुए भी जनता की उपस्थिति दर्शनीय थी। शान्तिपाठ के साथ उत्सव सम्पन्न हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 4 फरवरी, 2018 (रविवार) को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज जवाहर नगर पलवल, हरियाणा में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. सोमदेव शास्त्री अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई, श्री नरदेव जी, बेनीवाल आदि विद्वान् भाग लेंगे।

इस अवसर पर 21 कुण्डीय यज्ञ का अनुष्ठान किया जायेगा। आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. भूपेन्द्र सिंह आर्य का वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा की ओर से सार्वजनिक अभिनन्दन किया जायेगा। इस अवसर पर आर्यनेता डॉ. अनिल आर्य जी भी उपस्थित होंगे। सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो. जय प्रकाश जी आर्य करेंगे।

— संयोजक — स्वामी श्रद्धानन्द, राष्ट्रीय उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

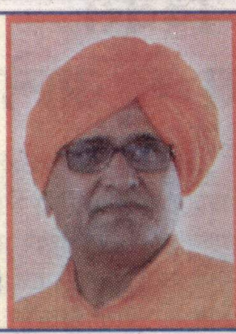

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा म :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

बलिदान दिवस बसन्त पंचमी पर विशेष

धर्म शहीद बालक हकीकत राय

– पं. नन्दलाल 'निर्भय सिद्धान्ताचार्य

आर्यवर्त्त (भारतवर्ष) वीर शहीदों, धर्मात्माओं, ऋषियों, मुनियों की पुण्य भूमि है। समय–समय पर भारत के वीर शहीदों ने देश, धर्म, जाति की रक्षा में हंसते हुए अपना जीवन भेंट चढ़ाया है। उन्हीं वीर शहीदों की प्रथम पंक्ति में धर्म शहीद बाल हकीकत राय का नाम आता है। जिसने पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में धर्म रक्षा में अपने प्राण न्योछावर कर संसार को चकित कर दिया था। आइये, उसी वीर बालक के महान त्याग एवं बलिदान की गाथा पढ़ें।

पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) के स्यालकोट नामक नगर मे महाजन भागमल एवं उसकी पत्नी कौरा देवी रहते थे। सन् 1719 ईस्वी में उनके घर एक पुत्र रत्न जन्मा। उसका नाम हकीकत राय रखा गया। परिवार धन–धान्य से भरपूर था, फलतः हकीकत राय का पालन–पोषण बड़े लाड़ प्यार से हुआ। वह कुशाग्र बुद्धि था, सब उसे घर में प्यार करते थे। महाजन भागमल तथा श्रीमती कौरा देवी उसे रामायण, महाभारत की कथाएँ सुनाया करते थे। उनकी धर्म परायणता का बालक हकीकत राय पर भारी प्रभाव पड़ा।

आठ वर्ष की आयु में बालक हकीकत राय ने पढ़ाई शुरू की। मेधा बुद्धि होने से वह एक बार में समझाने से ही पाठ कर लेता था। मौलवी (अध्यापक) उस पर बेहद प्यार करता था, इसलिए मुसलमान बालक उससे ईर्ष्या–द्वेष करते थे।

एक दिन मौलवी साहब किसी कार्यवश पाठशाला से कुछ समय के लिए बाहर चले गये तथा जाते समय हकीकत राय को उन्होंने कक्षा सम्भालने का आदेश दिया। उनके चले जाने पर मुसलमान बच्चों को उसने शोर–शराबा करने से रोका तो उन्होंने उसकी भारी पिटाई की। मौलवी साहब के आने पर हकीकत राय ने सारी बात उन्हें बता दी। मौलवी साहब ने मुसलमान बच्चों की अच्छी तरह धुनाई की तथा हकीकत राय को पुचकारकर छाती से लगाया। इससे मुसलमान बालकों ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातमा को गाली देने का आरोप लगाकर मौलवी की शिकायत अपने माता–पिता और नगर के काजी से कर दी। उन दिनों काजियों का बोलबाला था। उन्होंने फतवा जारी कर दिया कि या तो हकीकत राय मुसलमान बने या उसका सिर काट लिया जाये। महाजन भागमल, कौरा देवी अन्य गणमान्य हिन्दुओं ने काजी से प्रार्थना की कि छोटे से बालक को क्षमा कर दिया जाये लेकिन उनकी प्रार्थना किसी ने भी नहीं सुनी तथा मुख्य काजी ने भागमल, कौरा देवी को लात मार–मारकर भगा दिया।

कुछ हिन्दुओं ने नगर के हाकिम अमीर बेग के पास जाकर सारी घटना सुनाई। नगर हाकिम एक शरीफ आदमी था। उसने काजियों को बुलाकर समझाया कि यह छोटे–छोटे बच्चों का झगड़ा है, उसे खत्म करने में ही सबकी भलाई है। उसके समझाने पर भी वे न मानें और अमीर बेग पर भी रिश्वत लेने का आरोप लगा दिया। उसने भी विवश होकर मामला नवाब लाहौर को भेज दिया।

लाहौर के नवाब का कोई पुत्र नहीं था, केवल उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम नूरा था। उसने बालक हकीकत राय की सुन्दर भोली सूरत तथा छोटी उम्र देखी और सारे मामले को सुना तो दंग रह गया कि अब क्या किया जाये। अचानक उसने हकीकत राय से कहा – बेटा, हकीकत राय, मैं तेरी सुन्दर भोली सूरत पर पूरी तरह कुर्बान हूँ। तू मेरी एक बात मान ले तू मुसलमान बन जा, तेरी जान बच जायेगी। मैं अपनी

खूबसूरत बेटी नूरां का तेरे साथ निकाह कर दूँगा। मेरी सारी जायदाद (सम्पत्ति) का तू मालिक बन जायेगा। हकीकत राय ने नवाब का यह फैसला सुनकर उत्तर दिया –

'नवाब साहब, बात आपकी, मुझे न तनिक सुहाती है।
सच कहता हूँ, अक्ल आपकी, मुझको यह दर्शाती है।।
जो जग को रचने वाला है, जो सर्व विश्व का है स्वामी।
तुम जगदीश्वर को भूल गए, जो सच्चा न्यायकारी नामी।।
यदि मुसलमान बन जाऊँ मैं, क्या मौत मुझे ना आयेगी?
वह शक्ति कौन सी है जग में, जो तुमको सदा बचायेगी?

बालक हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब दंग रह गया और सिर नीचा करके बोला – "बेटा, संसार में प्रत्येक व्यक्ति की मौत आती है। मौत के पंजे से कोई भी नहीं बचा है और न बचेगा।" नवाब की यह बातें सुनकर वीर हकीकत राय ने गर्जते हुए कहा –

मरना है सबको एक रोज, तो फिर क्यों धर्म डुबाऊँ मैं?
गौ रक्षक से गौ भक्षक बन, फिर पापी, क्यों कहलाऊँ मैं?
मैं राम कृष्ण का वंशज हूँ, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।
है अमर आत्मा, याद रखो, न मारे से मर सकती है।
ईश्वर कर्मों का फल देता, न पेश किसी की चलती है।
मैं जन्म दूसरा धारूंगा, दोबारा जग में आऊँगा।
फिर तुम जैसे हत्यारों से, निर्भय होकर टकराऊँगा।

नवाब ने जब हकीकत राय की यह सिंह गर्जना सुनी, वह क्रोध के मारे लाल पीला हो गया। उसने उसी क्षण जल्लाद को बुलवाया और हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दिया। यह देखकर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। किसी में कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी। भागमल, कौरा देवी और निश्तेदार रो रहे थे। हकीकत राय की चौदह वर्ष की आयु में बटाला की लक्ष्मी देवी से शादी हो गई थी। वह बेचारी बटाला में बिलख रही थी। हिन्दू जनता भयभीत थी, यह था आपसी फूट का भयंकर परिणाम।

यह सन् 1734 ईस्वी की घटना है। सारे देश में बसन्त पंचमी का महापर्व मनाया जा रहा था और लाहौर में घोर अत्याचार हो रहा था। बालक हकीकत राय को वध स्थल पर ले जाया गया। जल्लाद ने जब हकीकत राय को देखा तो उसका पत्थर दिल भी पिघल गया और तलवार हाथ से नीचे गिर गई। यह देखकर हकीकत राय बोला –

जल्लाद दया करके भाई, अब बात मान ले तू मेरी।
तू तो अब अपना फर्ज निभा, क्यों करता है वृथा देरी।।
यदि मुझसे मोह करेगा अब, तू नाहक मारा जायेगा।
तेरे भी बालक रोयेंगे, सारा कुनबा दुःख पायेगा।।
मत बाधा बन मेरे पथ में, तू जल्दी कर, तू जल्दी कर।
मुझको तू धर्म निभाने दे, मेरे ह्रदय की पीड़ा हर।।

जल्लाद ने हकीकत राय की बात मानकर तलवार हाथ में ली और दिल मजबूत कर वीर हीकत राय की गर्दन पर तलवार का भरपूर वार किया। हकीकत राय का सिर कटकर एक ओर धरती पर गिर गया। कहते हैं वह उस समय हंस रहा था। धन्य था बालक हकीकत राय। वह धर्मरक्षा में अपना सिर कटवाकर भारत माता का सिर संसार में ऊँचा कर गया। जब तक सूरज, चांद सितारे, पृथ्वी पर रहेंगे, वीर हकीकत राय का नाम भी अमर रहेगा और भारत वीरों को धर्मरक्षा में बलिदान होने की प्रेरणा देता रहेगा।

सज्जनों! कुछ व्यक्ति कहते हैं कि उस समय मुगल बादशाह शाहजहां का शासन था तथा उसने नवाब और काजियों को मृत्युदण्ड दिया था किन्तु यह विचार निराधार है क्योंकि हकीकत राय का बलिदान सन् 1734 ईस्वी में बसन्त पंचमी के दिन हुआ था और उस समय मोहम्मद शाह रंगीला का शासन था। औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 ईस्वी में हो चुकी थी तथा शाहजहां की मौत तो औरंगजेब की जेल में ही हो गई थी। वास्तव में यह मुसलमानों की हिन्दुओं को मूर्ख बनाने की सोची समझी चाल है। हमें इसमें सावधान रहना चाहिए। अन्त में प्रभु से प्रार्थना है –

हे जगत् पिता हे जगदीश्वर! अब आर्यावर्त पर दया करो।
दो सुमति भारतीय वीरों को, अज्ञान अविद्या नाथ हरो।।
जिससे यह देवों का भारत, सिर मौर जगत का बन जाये।
भूखा–नंगा, अरु–दीन–दुखी, भारत में नजर नहीं आये।।

– ग्राम–बहीन, जनपद–पलवल, हरियाणा,
मो.:–9813845774

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
विश्व इतिहास में पहली बार
अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन का
दिनांक : 6, 7 व 8 जुलाई, 2018 को
दिल्ली में होगा भव्य आयोजन
सभी गुरुकुल एवं आर्यजन अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दें।
निवेदक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985
ई–मेल :– sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।